शोधपत्र

विषय से सन्दर्भित मौलिक शोध पत्र UNICODE में sangoshthiggtu2019@gmail.com पर प्रेषित करें।

सभी स्वीकार्य शोध पत्र (ISBN) प्रकाशित किए जाएगें।

पंजीयन शुल्क

संकाय सदस्य	–	500/–
शोधार्थी/विद्यार्थी	–	200/–
रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि	–	31 जुलाई 2019

शुल्क, चैक अथवा डीडी ''वित्त नियन्त्रक, जीजीटीयू'', बाँसवाड़ा के पक्ष में देय रहेगा।

नोटः आयोजक संस्था द्वारा प्रतिभागियों के भोजन एवं आवास की व्यवस्था रहेगी।

संरक्षकः

प्रो. कैलाश सोडाणी, माननीय कुलपति, जीजीटीयू, बाँसवाड़ा

प्रो. एन. के. पाण्डेय, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

आयोजन सचिवः

डॉ. नरेन्द्र पानेरी

सम्पर्कः 09001675959, 02962–247022

राष्ट्रीय संगोष्ठी

जनजातीय लोक संस्कृति एवं साहित्य

10–11 अगस्त, 2019

–: आयोजक :–

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय, बाँसवाड़ा

एवं

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय

प्राकृतिक सौन्दर्य एवं संसाधनों से समृद्ध जनजाति क्षेत्र में शिक्षा के उच्च और नवीन आयाम स्थापित करने के उद्देश्य से गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय बाँसवाड़ा की स्थापना हुई। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय से दक्षिण राजस्थान में स्थित बाँसवाड़ा, डूँगरपुर एवं प्रतापगढ़ के 120 महाविद्यालय सम्बद्धता प्राप्त है।

विश्वविद्यालय का उद्देश्य नवीन ज्ञान का सृजन करना, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों को दक्ष करना एवं जनजातीय क्षेत्र के युवाओं को समाज एवं राष्ट्र हेतु तैयार करना जिससे वे देश की तरक्की में अपनी भागीदारी तय कर सकें।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

भारत सरकार के **'मानव संसाधन विकास मंत्रालय'** के अधीन 1961 में **''केन्द्रीय हिन्दी संस्थान''** नामक एक उच्चतर शैक्षिक और शोध संस्थान की स्थापना की गयी है। संस्थान का प्रमुख कार्य हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाना है। संस्थान ने केवल भारत में ही नहीं वरन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति और मान्यता प्राप्त की।

'जनजातीय लोक संस्कृति एवं साहित्य' परिचय

आधुनिक वैज्ञानिकता की चमत्कारपूर्ण जीवन पद्धति की जटिलताओं से सर्वथा दूर एक ऐसी भी सृष्टि विद्यमान रही है जो नित्य नूतन शस्य श्यामल, परम पवित्र, अकृत्रिम, सहज तथा परम्परानुमोदित संस्कारों की उर्वरता से सम्पन्न है। यह ऐसी स्वछन्द सृष्टि है, जिसकी सतता पोथियों के ज्ञान से निर्मित नहीं है। जहाँ व्याकरण के अनुशासन की श्रृंखला नहीं है। इस लोक का प्राणी जीवन के विराट और विशाल महासागर की लहरों पर सनातन काल से तैरती हुई अनुभवों की रत्नाभा से प्रेरणा ग्रहण करता रहा है। यहाँ का प्राणी गीतों की लय तथा ताल पर थिरकता है, कथाओं तथा गाथाओं की धारा में निर्बाध बहता हुआ लोकमंगल की कामना के किनारों को संस्पर्श करता है और प्रहेलिकाओं तथा लोकोक्तियों की टेढ़ी–मेढ़ी वक्रिल पगडंडियों पर संचरण करता हुआ लोग रंगमंच की अकृत्रिम अभिनय शैली की विविध नाट्य–मुद्राओं से अनुरंजित होता है। जंगल में खिलने वाले फूलों की तरह यह ''सृष्टि'' भी सुन्दर, स्वाभाविक तथा सहज जनजातीय समाज में सजीव और साकार रूप में प्रतिबिम्बित हो रही है। इसी अमूल्य धरोहर को समय एवं समाज सापेक्ष बनाकर उसकी प्रासंगिता एवं उपादेयता को स्वीकार्य एवं अनुकरणीय बनाना ही इस संगोष्ठी का महनीय उद्देश्य है।

संगोष्ठीः

10 अगस्त 2019, शनिवार

प्रातः 10.00 से 11.00 बजे	:	पंजीयन एवं अल्पाहार
प्रातः 11.00 से 12.30 बजे	:	उद्घाटन समारोह
दोपहर 12.30 से 1.30 बजे	:	भोजन
दोपहर 1.30 से 4.00 बजे	:	तकनीकी सत्र–प्रथमः जनजातीय लोक संस्कृति
सायं 4.00 से 6.00 बजे	:	संस्कृति दर्शन

11 अगस्त 2019, रविवार

प्रातः 9.30 से 12.00 बजे	:	तकनीकी सत्र–द्वितीयः जनजातीय लोक साहित्य
दोपहर 12.00 से 1.30 बजे	:	समापन समारोह
दोपहर 1.30 से 2.30 बजे	:	भोजन